# शोध सारांश

मनुष्य अपनी अस्मिता के लिए सदैव से संघर्ष करता रहा है। आजादी के 68 साल बाद भी भारत में सामाजिक न्याय-व्यवस्था पूर्ण रूप से स्थापित नहीं हो पाई है। आज भी स्त्रियों को तरह-तरह से अपमानित, शोषित और प्रताड़ित किया जाता है। भारतीय समाज में सदियों से चली आ रही लिंग भेद की मानसिकता आज भी हमारे समाज में उसी रूप में विद्यमान है, जो अवसर पाते ही बाहर निकल आती है।

ममता कालिया का उपन्यास 'एक पत्नी के नोट्स' आज की समस्याओं को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। यह उपन्यास आधुनिक जीवन बोध के साथ-साथ समाज में लिंग भेद को उजागर करता है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने आज की स्त्रियों की जीवन शैली तथा उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि को केन्द्र में रखकर यथार्थ को व्यक्त किया है। स्ततंत्रता के बाद स्त्रियों की स्थिति में काफी परिवर्तन हुआ है। आरक्षण आदि के कारण समाज एवं राजनीति में इसकी सहभागिता बढ़ रही हैं तथा सरकारी क्षेत्रों में इनके रोजगार के अवसर निश्चित किये जा रहे है। इससे इसकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में परिवर्तन हो रहा है। शिक्षा तथा सामाजिक आंदोलन के कारण इनमें जागरूकता का प्रसार हुआ है और कुछ हद तक धार्मिक रूढ़ियों, पाखण्डों आदि कुप्रथाओं से स्त्रियाँ मुक्त हुयी हैं।

इतना सब कुछ होने के बाद भी स्त्रियाँ अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष कर रही है, उन्हें किसी-न-किसी रूप में स्त्री होने का दंश झेलना पड़ता है। सरकार ने स्त्रियों को संवैधानिक अधिकर तो प्रदान किये हैं परन्तु समाज व परिवार में अभी भी उन्हें पुरुषों के बराबर अधिकार व सम्मान नहीं मिल पा रहा है। 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास में स्त्री अस्मिता का प्रश्न सशक्त रूप से उभर कर सामने आता है।

प्रस्तुत लघु शोध -प्रबंध में कुल तीन अध्याय है। पहला अध्याय स्त्री-पुरुष संबंध का स्वरूप है । इसको पुन: तीन उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम उप-अध्याय को पुनःदो उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है- मातृसत्तात्मक व्यवस्था और पितृसत्तात्मक व्यवस्था इस अध्याय में मातृसत्तात्मक व्यवस्था और पितृसत्तात्मक व्यवस्था को विभिन्न विद्वानों की परिभाषाओं के द्वारा समझाया गया और साथ ही ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की पड़ताल की गई है और वर्तमान समय की पितृसत्ता

के स्वरूपो की चर्चा कि गई है। दूसरा उप-अध्याय को पुनः दो उप-अध्याय में विभाजित किया गया है। 'परिवार' और 'सामाजिक संरचना' इस अध्याय में 'परिवार' और 'सामाजिक संरचना' को भारतीय दृष्टिकोण से परिभाषित करते हुए इसकी विस्तृत चर्चा की गई है साथ ही विभिन्न समाजशास्त्रियों की परिभाषाओं के द्वारा 'परिवार' और 'सामाजिक संरचना' को विस्तार से चर्चा किया गया है।

तीसरा उप-अध्याय में 'आधुनिक समाज में बदलते स्त्री-पुरुष संबंध' की विस्तृत चर्चा की गई है। इस अध्याय में स्त्री-पुरुष के संबंधों पर केन्द्रित उपन्यासों को विस्तारपूर्वक बताने की कोशिश की गयी है कि आधुनिक युग में स्त्री–पुरुष के संबंध किस प्रकार प्राचीन काल से भिन्न है।

द्वितीय अध्याय: 'एक पत्नी के नोट्स' में स्त्री-पुरुष संबंधों की कथात्मक अभिव्यक्ति है। इस अध्याय को पुन: तीन खंड़ों में विभाजित किया गया है। प्रथम उप-अध्याय में 'प्रेमी -प्रेमिका संबंध' को सविस्तार चिरित किया गया है। दूसरे उप-अध्याय में 'पति-पत्नी संबंध' को बताया गया। उच्च शिक्षित मध्यवर्गीय परिवार की 'पति-पत्नी' संबंध को सविस्तार वर्णन किया गया है और यह बताया गया है कि पत्नी अब पति का दासी या गुलाम बन कर नहीं जीना चाहती है। और पति के किसी भी बातों को आँख बंद कर स्वीकार नहीं कर सकती है। वह कोई भी निर्णय अपनी तार्किक दृष्टि से ले सकती है। अत: आधुनिक समाज में पहले के अपेक्षा स्त्री-पुरुष के संबंध बदल रहे हैं।

तीसरा उप-अध्याय 'विवाहेत्तर संबंध' की सविस्तार वर्णन किया गया है और साथ ही उपन्यास में वैवाहिक संबंध किस प्रकार है इसका विश्लेषण किया गया है।

तीसरा अध्याय 'एक पत्नी के नोट्स' का शिल्प विधान है। इसको पुन: तीन उप-अध्याय में विभाजित किया गया है। प्रथम उप-अध्याय 'भाषा-शैली' है। 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास की भाषा-शैली व्यंग्यात्मक है। भाषा में व्यंग्य का तीखे तेवर है। दूसरा उप-अध्याय में 'संवाद-योजना' है। इस अध्याम में उपन्यास के संवाद-योजना का सविस्तार से वर्णन किया गया है। तथा तीसरा उप-अध्याय 'चरित्र-चित्रण' है। इसमें बताया गया है कि उन्यास में लेखिका ने चरित्र-चित्रण का सृजन किस प्रकार की है। उनके नारी पात्र अधिकतर मध्यवर्ग के बुद्धिजीवी पात्र है। वह अपनी जिन्दगी का निर्णय लेने में सक्षम है।

कविता एक बौद्धिक महिला है। फिर भी पति संदीप जो एक अधिकारी है, विश्वविद्यालय से किसी कारण वह देर से घर पहुंचने पर संदीप कविता पर चरित्र हीनता का इल्जाम लगाता है। किसी मित्रों

द्वारा कविता का प्रशंसा सुनना उसे बर्दास्त नहीं होता है। संदीप हमेशा कविता को अपने से नीचा देखना चाहता है, जबकि कविता मित्र की तरह जीवन व्यतीत करना चाहती है। लेकिन संदीप को कविता की आधुनिक व्यवहार अप्रिय लगता है जिसके कारण पति-पत्नी के संबंधों में दरार आ जाता है और विवाह संस्था का पारस्परिक समीकरण गड़बड़ाता प्रतीत होता है। वह अपने को पति की संम्पत्ति नहीं मानती है, और न ही भोग्य वस्तु मानती है वह पति से बौद्धिक बहस करती है और अपनी मानवीय उपस्थिति दर्ज कराती है।पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था द्वारा स्थापित मान्यताओं को चुनौती देते हुए स्थितियों का पहचान करती है। संस्कार बोध के कारण जब तक सामंजस्य कर पाती है करती है। जब सामंजस्य करना एकदम असहनीय या दुष्कर लगता है तब घर छोड़ने का निर्णय लेती है।

उपन्यास में कई प्रकार के प्रेम को परिभाषित और मूल्यांकित किया गया है, विवाह के पूर्व किया गया प्रेम और विवाह के पश्चात के प्रेम को दिखाया गया है।

इस उपन्यास की समाप्ति नाटकीय मोड़ पर होती है। दु:खी कविता जब घर छोड़ने का निर्णय कर ट्रेन में बैठती है तो संदीप उसे रोकने के लिए चलती ट्रेन से छलांग लगा देता है। संवेदनशील कविता बिना कुछ सोचे समझे ही वह भी ट्रेन से छलांग लगा देती है। इसी कारण उपन्यास प्रेमपरक हो जाता है।

अत: महिलाएं शिक्षित और आत्मनिर्भर होते हुए भी पुरुष के चंगुल से बाहर निकल नहीं पाती हैं, लेकिन निकलने का प्रयास जरूर करती हैं। अत: इस उपन्यास में स्त्री –पुरुष संबंध में असमानता दिखाई देती है।शोध के दोरान हमने पाया कि स्त्रियों को समानता कि दृष्टि से नहीं देखा जाता  है आज भी स्त्रियां योग्य होते हुए भी स्त्री होने का दंश भोगना पडता है।  इससे समाज में तमाम स्त्रियों कि स्थिति उजागर होती है।